B.A. PART-1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य)
आधुनिककाल
शेषभाग-2

प्रश्न :- भारतेन्दु-कालीन हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय देते हुए हिन्दी-काव्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का स्थान निर्धारित करें ?

उत्तर- शेषभाग :-

इनके काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ हैं—

1. देश-प्रेम की व्यंजना (2) भक्ति-भावना (3) सौन्दर्य तथा प्रेम का चित्रण (4) हास्य और व्यंग्य (5) सामाजिक जागरण (6) प्रकृति-चित्रण (7) भाषा-प्रेम (8) जन-काव्य। ये विशेषताएँ भारतेन्दु के काव्य में तो प्राप्त होती ही हैं, इस युग के अन्य कवियों में भी ये प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। भारतेन्दु वस्तुतः अपने युग और उसकी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले कवि हैं।

1. देश-प्रेम की व्यंजना :-

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक युग के सर्वप्रथम राष्ट्रीय कवि हैं। उनके नाटकों और कविताओं में देश-प्रेम की भावना बड़े सशक्त रूप से व्यक्त हुई है। उनकी कविताओं में यह देश-प्रेम कहीं विदेशी शासकों के विरोध के रूप में प्रकट हुआ है, तो कहीं स्वदेश-वासियों को जागृत करने में। अतिरिक्त इन्होंने भारत के सभी धर्मों, जातियों एवं विविध भाषाओं के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाकर राष्ट्र-प्रेम का परिचय दिया है। कुछ आलोचक भारतेन्दु को 'राजभक्त' तथा 'अँग्रेजों का प्रशंसक' मानते हैं, परन्तु यह उनका भ्रम है, उनकी अधिकतर कविताओं में अँग्रेजों की नीति की निन्दा है और जिन कविताओं के आधार पर उन पर राजभक्ति का आरोप किया जाता है, उनमें भी विद्रोह की आग छिपी है। अँग्रेजों की अफगान-विषय कविता में अँग्रेजों की नीति का रहस्योद्घाटन बड़ी निर्भीकता से कवि ने किया है—

"सत्रु सत्रु लड़वाइ दूर रहि लखिय तमासा।
प्रबल देखिए जाहि ताहि मिलि दीजै आसा।।"

नए जमाने की मुकरियों में भी कई मुकरियों का सम्बन्ध अँग्रेजों की शोषण नीति से है–

"भीतर-भीतर सब रस चूसे।
हँसि-हँसि के तन मन धन मूसे।
जाहिर बातन में अति तेज।
क्यों सखि सज्जन! नहिं अँग्रेज।।"

इस प्रकार भारतेन्दु की कविता से अनेक ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं जिनमें कवि ने भारत की करुण दशा तथा अँग्रेजों की शोषण-नीति का वर्णन किया है।

2. भक्ति-भावना :-

भारतेन्दु युग की दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति भक्ति-भावना की है। इस काल के कवियों के सामने भक्तियुग का आदर्श था। भारतेन्दु में हमें सूरदास की सी कृष्ण-भक्ति प्राप्त होती है, भक्ति के संस्कार उन्हें पैतृक दाय के रूप में प्राप्त हुए थे। उन्होंने अपने आपको राधा-कृष्ण का अनन्य भक्त स्वीकार किया है–

"मेरे तो साधन एक ही है,
जय नन्दलला वृषभानु कुमारी।।"

3. श्रृंगार-भावना :-

भारतेन्दु युग की अन्य विशेषता श्रृंगार-भावना का चित्रण है। भारतेन्दु की अनेक रचनाओं-प्रेम-सरोवर, प्रेम-माधुरी, प्रेम-तरंग आदि में श्रृंगार-भावना की अभिव्यक्ति हुई है। भारतेन्दु का श्रृंगार-वर्णन रीतिकालीन श्रृंगारी कवियों के अश्लील एवं स्थूल श्रृंगार से सर्वथा भिन्न है। उनके प्रेम-वर्णन और श्रृंगार-भावना का आदर्श अत्यन्त ऊँचा था–

"एक अंगी बिनु कारने इक रस सदा समान।
पियहिं गनै सर्वस्व जो सोई प्रेम प्रमान।।"

प्रेम का यह आदर्श रसखान, घनानन्द आदि रीतिमुक्त कवियों में प्राप्त होता है।

(4) हास्य - व्यंग्य :-

भारतेन्दु - काव्य में हास्य और व्यंग्य का पर्याप्त समावेश है। यहाँ हास्य शिष्ट और सोद्देश्य है। 'बन्दर सभा' में कवि निम्नकोटि के नाटकों का उपहास करता है तो इनकी मुकरियों में हास्य और व्यंग्य अत्यन्त सशक्त बना है। 'खिताब' पर इनकी एक मुकरी देखिए -

"इनकी उनकी खिदमत करो,
रुपया देते देते मरो।
तब आवें मोहि करन खराब,
क्यों सखि सज्जन नहिं खिताब।"

भारतेन्दु के हास्य - व्यंग्य की प्रवृत्ति का पूर्ण विकास उनके नाटकों में हुआ है। 'अँधेर नगरी' तथा 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' उनके हास्य - व्यंग्य प्रधान श्रेष्ठ नाटक हैं।

5. प्रकृति - चित्रण :-

भारतेन्दु मुख्य रूप से मानव - प्रकृति के कवि हैं, फिर भी उन्होंने कहीं - कहीं प्रकृति के सुन्दर चित्र उतारे हैं। 'गंगा - वर्णन', 'यमुना - वर्णन', 'प्रात्-समीरण' में प्रकृति के मार्मिक, भावपूर्ण और अलंकृत चित्र हैं। भारतेन्दु के सहयोगी लेखकों में प्रेमघन और ठाकुर जगमोहन सिंह के प्रकृति - चित्रण सुन्दर बन पड़े हैं।

(शेष भाग बचा है।)

पता :-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
दिनांक - 15.02.2023
मो० न० - 7909046087